International Journal of Sanskrit Research 2024; 10(1): 220-225

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2024; 10(1): 220-225
© 2024 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 23-11-2023
Accepted: 27-12-2023

विष्णुदेव तिवारी
पीएच्ण्डी शोधच्छात्र,
संस्कृत विभाग, दिल्ली
विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
विष्णुदेव तिवारी
पीएच्ण्डी शोधच्छात्र,
संस्कृत विभाग, दिल्ली
विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

स्वामी दयानन्द का संस्कृत व्याकरण को योगदान

विष्णुदेव तिवारी

प्रस्तावना

भाषा में प्रयुज्यमान शब्दों के सम्यक् अ धगम के लए प्रत्येक भाषा में व्याकरण का वधान कया गया है, जैसा क व्याकरण शब्द की व्युत्प त्त करने से स्पष्ट हो जाता है क यह शास्त्र शब्दों की निष्प त्त को आधार बनाकर उनके अर्थ ज्ञापन में प्रवृत्त होता है। व्याकरण शब्द ‘ व’ और ‘आङ्’ उपसर्ग पूर्वक ‘कृ’ धातु से ‘भाव’ अथवा ‘करण’ अर्थ में ‘ल्युट्’ प्रत्यय करके सद्ध हुआ है। व्या क्रयन्ते ये ते शब्दाः व्याकरणाः यह भाव अर्थ में व्युत्प त्त है, इसका वाचक शब्द है, तथा व्या क्रयन्ते निष्पाद्यन्ते शब्दाः अनेन् तद् व्याकरणं[1] यह करण अर्थ में व्युत्प त्त है, तथा इसका वाच्य व्याकरण शास्त्र है। जिस शास्त्र के द्वारा प्रकृति प्रत्यय आगमादेशादि के द्वारा शब्दों की व्युत्प त्त की जाती है उस शास्त्र को व्याकरण कहते हैं।

वर्तमान समय में मह र्ष पा णनि व्याकरण के क्षेत्र में एक सीमा के रूप में प्रयुक्त होते हैं। पा णनि पूर्व व्याकरण और पा णन्युत्तर व्याकरण ऐन्द्र, चान्द्र आदि व्याकरण पा णनि से पूर्व भी प्र सद्ध हुए थे, तथा पठन पाठन की परम्परा में भी रहे थे, यह तथ्य स्वयं पा णनीय व्याकरण में उद्धृत शाकल्य, शाकटायन, आ पश ल, गालव, गार्ग्य आदि वैयाकरणों को देखने से सुतरां स्पष्ट होता है। पा णनीय व्याकरण पर वररु च कात्यायन के सूत्र और वार्तिक दोनों पर मह र्ष पतञ्ज ल के भाष्य ने इस व्याकरण को जहाँ सम्पूर्णता प्रदान की है वहीं इनकी महत्ता के कारण पा णनि व्याकरण को त्रिमुनि व्याकरण भी कहा जाता है। पा णनि ने अपने व्याकरण शास्त्र को अष्टाध्यायी, धातुपाठ, गणपाठ, उणादिपाठ तथा लङ्गानुशासन इन पाँच उपदेशों के द्वारा सर्वांग सम्पूर्ण बनाया है तथा इस व्याकरण पर महाभाष्यकार पतञ्ज ल से लेकर अद्याव ध

[1] महाभाष्य पस्पशा ह्नक शब्दे ल्युडर्थःवार्तिक के प्रसंग में

अनेकानेक भाषामर्मज्ञ वद्वद्जनों ने टीकाएं व्याख्यायें तथा भाष्य लखें हैं। इन्हीं वैयाकरणों की परम्परा में स्वामी दयानन्द सरस्वती एक वैयाकरण हैं, जिनका महत्तम योगदान व्याकरण शास्त्र को प्राप्त हुआ है। स्वामी दयानन्द सरस्वती का संस्कृत व्याकरण शास्त्र को योगदान का मूल्यांकन करना ही इस लेख का वषय है।

वक्रम सम्वत् १८८१ के 'भाद्रपद मास' के 'शुक्लपक्ष' 'नवमी ति थ' को 'मूल नक्षत्र' में प्रातः 'साढे तीन बजे' स्वामी दयानन्द का जन्म वर्तमान 'गुजरात प्रान्त' के 'मोरबी राज्य' के अन्तर्गत 'टंकारा' नामक ग्राम में 'जीवापर' मुहल्ले में औदीच्य ब्राह्मण 'कर्षन जी लाल जी तिवारी' के घर पर हुआ था[2]। बचपन में इस बालक का नाम मूल शंकर रखा गया था[3]। उनकी माता का नाम अमृतबेन था[4]। सम्वत् १९०३ में २२ वर्ष की अवस्था में मूलशंकर ने अपने घर का त्याग कर दिया[5]। सायला ग्राम में ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी बनें, बाद में स्वामी पूर्णानन्द से संन्यास की दीक्षा लेकर दयानन्द सरस्वती नाम धारण कया[6]। सम्वत् १९१७ में अनेक साधु संतों के आश्रमों में भ्रमण करने के उपरान्त मथुरा में प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी वरजानन्द की शरण में आकर वद्याध्ययन कया[7]। सम्वत् १९२० में स्नातक बनकर गुरु को दिये गये वचन के अनुसार आर्ष ग्रन्थों और वैदिक परम्पराओं का प्रचार प्रसार प्रारम्भ कया। सम्वत् १९३२ में आर्यसमाज नामक संस्था की स्थापना करके समस्त भारतवर्ष में वेदादि सत्य शास्त्रों का अध्ययन, अध्यापन, शोध एवं प्रचार प्रसार करते रहे। संवत् १९४० में ३० अक्टूबर कार्तिक कृष्ण अमावस्या को स्वामी दयानन्द का देहान्त हुआ।

स्वामी दयानन्द का जन्म ऐसे ब्राह्मण परिवार में हुआ तथा जो राजव्यवस्था से संयुक्त थे, तथा पौरोहित्यादि को ब्राह्मण का मुख्य कर्म समझते थे। उस समय में सम्पूर्ण भारतवर्ष पर अंग्रैजों का शासन था। देश परतंत्र था। क्षत्रियों में आपसी अहंकार वला सता आपसी वद्वेष का भाव था। वैश्यवर्ग का व्यापार अंग्रेजों के अधीन था तथा अन्य निम्न लोग अंग्रेजों की दीनहीन प्रजा थे। ऐसी परिस्थति में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने परतंत्रता के मूल कारणों पर वचार करते हुए उनके समूल उच्छेद का प्रयत्न करना अपना कर्तव्य बना लया। स्वामी दयानन्द की दृ ष्ट में देश की परतंत्रता का कारण वेदों का पढना पढाना छूट जाना, आर्ष ग्रन्थों से दूर हो जाना तथा आपसी फूट एवं अ वद्या का होना था। इन्हीं कारणों को समूल उच्छेद करने के लये स्वामी दयानन्द ने आजीवन अनिश अजस्र प्रयत्न करते रहे। लेखन, प्रवचन तथा शास्त्रार्थ इनके मुख्य अस्त्र थे[8]।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के आगमन से पूर्व व्याकरण शास्त्र का अध्ययन अधयापन पा णनि मुनि प्रोक्त क्रम से होना प्रायः बन्द ही हो गया था। मूल अष्टाध्यायी पढने-पढाने के स्थान पर प्र क्रया ग्रन्थों सद्धन्तकौमुदी आदि का पठन-पाठन प्रच लत हो गया था। पा णनीय अष्टाध्यायी में व्याकरण वषय को सम्यक् समझने के लये प्रकरणों, अनुवृ तयों, उत्सर्ग, अपवाद, पूर्व, पर आदि व्यवस्था को समझना अत्यन्त आवश्यक है। प्र क्रया ग्रन्थों में इस व्यवस्था को वच्छिन्न करने से अष्टाध्यायी

[2] मा स भाद्रपदे पक्षे सतवारे वृहस्पतेः। नवम्यां मध्यमायाते बास्लरेऽ प वहायसः। नक्षत्रेऽति शुभे योगेऽति प्रीति ववर्धने। चन्दराष्ट वसुराकेश योजनालब्ध भावने। वक्रमादित्यनृपतेर्वत्सरेजगतां गुरुः। निर्गत्य जननीकुक्षेरागतोजगतीतले। दयानन्ददिग्विजय सर्ग ३.३७.३९

[3] नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती-शैशव और अध्ययन पृष्ट-८

[4] आर्यमर्यादा १८ मार्च १९७३ तथा सुधारक गुरुकुल झज्जर मई १९७३

[5] मह षं दयानन्द की आत्मकथा पृ १२ तथा नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती पृ२२

[6] वहीं-पृ २६

[7] मह षं दयानन्द का जीवन चरित्र पृ ४

[8] नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती-शैशव और अध्ययन पृ ८

के कतिपय सूत्र तो व्यर्थ से ही हो जाते हैं। जैसे- वप्रतिषेधे परं कार्यम्[9] अर्थात् एक ही स्थिति में दो सूत्र प्राप्त हों और दोनों तुल्यबल वरोध हों तो उनमें जो सूत्र पर हो उसका कार्य हो। जैसे-'रामाभ्याम्' में यञादि सुप् परे रहते अंग के अकार को सु प च[10] से दीर्घ होता है कन्तु 'रामेभ्यः' में ऐसी ही स्थिति होने पर पुनः 'सु प च' से दीर्घ प्राप्त होता कन्तु 'पर' सूत्र बहुवचने झल्येत्[11] से एकारादेश होकर 'रामेभ्यः' सद्ध होता है। 'पूर्व' 'पर' की व्यवस्था को समाप्त करने के उपरान्त अध्येता के लये यह समझना कठिन हो जायेगा क 'रामेभ्यः' में सु प च से दीर्घत्व क्यों नहीं होता। इसी प्रकार पठन्ति, पचन्ति आदि भौवादिक, चौरादिक आदि गणस्थ धातुओं के प्रथम पुरूष बहुवचनान्त प्रयोगों में पठ+अ+अन्ति इस स्थिति में अकः सवर्णे दीर्घः[12] से दीर्घ हो अथवा अतो गुणे[13] से पररूप हो यहाँ 'अकः सवर्णे दीर्घः' को बाधकर 'अतो गुणे' से पररूप होता है। यद्य प यह सूत्र पूर्व में है कन्तु यहाँ 'अतो गुणे' के अपवाद रूप होने से 'अतो गुणे' से पररुप होता है, दीर्घत्व नहीं होता। इस उत्सर्गापवाद की व्यवस्था को समझे बिना व्याकरण की सम्यक् अवगति दुरुह ही बनती है।

स्वामी दयानन्द से पूर्व प्र क्रया प्रन्थों के अध्ययन-अध्यापन की परम्परा प्रच लत होने से संस्कृत कअ पढना पढाना रटन्त वद्या कहा जाने लगा था। दयानन्द सरस्वती के गुरु दण्डी स्वामी वरजानन्द आर्ष ग्रन्थों के प्रबल समर्थक तथा अनार्ष ग्रन्थों सद्धन्तकौमुदी आदि के प्रबल वरोधी थे, उनका कहना था-अष्टाध्यायी महाभाष्ये द्वे व्याकरण पुस्तके।

> अन्यत् यत् कल्पितं किञ्चित् तत् सर्वं धूर्त चे ष्टतम्[14]।

अपने गुरु की परम्परा का अवगाहन करते हुए स्वामी दयानन्द आर्ष ग्रन्थों के पढने पढाने के वषय में लखा है क-डेढ वर्ष में अष्टाध्यायी और डेढ वर्ष में महाभाष्य पढकर तीन वर्ष में पूर्ण वैयाकरण होकर वैदिक और लौ कक शब्दों का व्याकरण से पुनः अन्य शास्त्रों को शीघ्र सहज में पढ-पढा सकते हैं[15], कन्तु जैसा बडा परिश्रम व्याकरण में होता है वैसा श्रम अन्य शास्त्रों में करना नहीं पडता और जितना बोध इनके पढने से तीन वर्षों में होता है उतना बोध कुग्रन्थ अर्थात् सारस्वत, चन्द्रिका, सद्धान्तकौमुदी, मनोरमादि के पढने से पचास वर्षों में भी नहीं हो सकता, क्यों क जो महाशय मह र्ष लोगों ने सहजता से महान वषय अपने ग्रन्थों में प्रका शत कया है वैसा इन क्षुद्राशय मनुष्यों के कल्पित ग्रन्थों में क्योंकर हो सकता है। मह र्ष लोगों का आशय जहाँ तक हो सके वहाँ तक तक सुगम और जिसके ग्रहण में समय थोडा लगे इस प्रकार का होता है। क्षुद्राशय लोगों की मनसा ऐसी होती है क जहाँ तक बने वहाँ तक तक कठिन रचना करनी, जिसको बडे परिश्रम से पढके अल्पलाभ उठा सकें, जैसे-पहाड का खोदना कौडी का लाभ होना, और आर्ष ग्रन्थों का पढना ऐसा है क जैसा एक गोता लगाना बहुमूल्य मोतियों का पाना[16]।

इस प्रकार स्वामी दयानन्द आर्ष परम्परा के प्रबल समर्थक तथा अनार्ष परम्परा के उग्र वरोधी थे। व्याकरण को पुनः अष्टाध्यायी परम्परा से पढने-पढाने का समर्थन करने के उपरान्त तथा सत्यार्थप्रकाश में सम्पूर्ण पाठ व ध का निर्धारण करने के उपरान्त भी उन्होंने वेदांगप्रकाश के नाम से र चत अपने चौदह ग्रन्थों में से सन्धि वषय, ना मक, कारकीय, सामा सक, स्त्रैणता द्धत, आख्यातिक, सौवर आदि ग्रन्थों में अष्टाध्यायी क्रम को खण्डित कर भन्न- भन्न प्रकरणों को पृथक्-पृथक् ग्रन्थों के

[9] अष्टाध्यायी-१.४.२

[10] वहीं-७.३.१०२

[11] वहीं-७.३.१०३

[12] अष्टाध्यायी-६.१.१०१

[13] वहीं-६.१.९७

[14] संस्कृत व्याकरणशास्त्र का इतिहास भाग-१ पृ ३९५

[15] सत्यार्थप्रकाश-तृतीय समुल्लास

[16] सत्यार्थप्रकाश--तृतीय समुल्लास

रूप में लखा है। इन ग्रन्थों में पा णनि सूत्र क्रम भ्रष्ट हुआ है। ये सभी ग्रन्थ हिन्दी भाषा में हैं। यहाँ यह प्रश्न स्वाभा वक है क स्वामी जी प्र क्रया क्रम का खण्डन करते हैं तो स्वयं भी उसी क्रम में रचना क्यों करते हैं। स्वामी दयानन्द ने अष्टाध्यायी का संस्कृत तथा हिन्दी भाषा में भाष्य भी कया है जो वर्तमान में जो वर्तमान में तीन अध्याय तक प्रका शत उपलब्ध है। दोनों क्रम से व्याकरण शास्त्र का लेखन करना कन्तु पाठ व्यवस्था में अष्टाध्यायी क्रम का प्रबलतम समर्थन करना इस बात का द्योतक है क स्वामी जी दो प्रकार के अध्येता मानते हैं एक वे हैं जो प्रौढ हो गये हैं और सत्यार्थप्रकाश निर्दिष्ट व ध से गुरु की सन्नि ध में बैठकर अध्ययन करने में असमर्थ हैं, वे यदि व्याकरण के कुछ-कुछ प्रकरणों को जानना चाहें तो उपर्युक्त सन्धि वषय आदि ग्रन्थों को घर पर रहकर ही स्वाध्याय करके कुछ-कुछ परि चत हो जावें, तथा दूसरे अध्येता वे हैं जिनको अभी अध्ययन आरम्भ करना है और जो शास्त्रज्ञ होना चाहते हैं तथा गुरु आश्रम में जाकर अध्ययन कर सकते हैं वे अष्टाध्यायी की प्रथमावृ त्त पुनः द्वितीयवृ त्त (का शका) पुनः महाभाष्य पढकर क्र मक रूप से व्याकरण का अध्ययन करें। स्वामी दयानन्द ने व्याकरण के अनेक ग्रन्थ लखे हैं जो निम्न ल खत हैं-

1. वर्णोच्चारण शक्षा: यह वेदांगप्रकाश का प्रथम भाग है इसमें स्वामी जी ने आठ प्रकरणों में वर्णों के वषय में सम्पूर्ण जानकारी सहेजी है।
2. कारकीय: इस पुस्तक में अष्टाध्यायी के कारक और वभ क्त प्रकरण को समाहित कया गया है।
3. सन्धि वषय: इस पुस्तक में सभी अजन्त हलन्त तथा वसर्ग सन्धियों का संकलन कया गया है।
4. सौवरः इसमें स्वामी जी ने व्याकरणोक्त सम्परण स्वर प्र क्रया का ववेचन कया है।
5. ना मक: इसमें सुबन्त पदों की स द्ध प्र क्रया दर्शायी है।
6. स्त्रैणता द्धत: अष्टाध्यायी के चतुर्थ और पञ्चम अध्याय में प्रोक्त स्त्री प्रत्ययों तथा त द्धत प्रत्ययों का ववेचन कया गया है।
7. सामा सक: इसमें अष्टाध्यायी के द्वितीयाध्याय के प्रथम और द्वितीय पाद के समास वधायक सूत्रों का ववेचन कया गया है।
8. आख्यातिक: इसमें पा णनीय धातुपाठ के क्रमशः सभी धातुओं का अर्थ सहित ववेचन करते हुए अष्टाध्यायी सूत्रों के प्रयोग पुरस्सर धातुरूपों की स द्ध दर्शायी है।
9. उणादिसूत्रवृ त्त: सम्पूर्ण पा णनीय उणादिपाठगत सूत्रों की व्याख्या, उदाहरण तथा उनकी व्युत्प त्त इस ग्रन्थ में प्रस्तुत की गयी है।
10. पारिभा षक: पा णनि व्याकरण में प्रयुक्त महाभाष्य पठित परिभाषाओं की आर्य भाषा में व्याख्या इस ग्रन्थ में की गयी है।
11. अव्ययार्थ: इस लघु ग्रन्थ में सभी अव्ययों का अर्थ तथा उनका प्रयोग प्रस्तुत कया गया है।
12. धातुपाठ: पा णनीय धातुओं पर आख्यातिक नाम से वृ त्त लखने के अतिरिक्त स्वामी जी ने पा णनीय धातुपाठ का भी सम्पादन कया है।
13. गणपाठ: अष्टाध्यायी सूत्रों में प्रोक्त गणों का सम्पादन इस ग्रन्थ में कया गया है।

इसके अतिरिक्त निरुक्त वेदांग पर भी जो क व्याकरण की पूर्णता है तथा उसके आधार ग्रन्थ निघन्टु का भी सम्पादन कया है।

अष्टाध्यायी भाष्य: पा णनीय अष्टाध्यायी पर क्र मक रूप से प्रतिसूत्र व्याख्या वशेष टिप्प णयों सहित संस्कृत और आर्यभाषा से समन्वित स्वामी जी के द्वारा वहित है जो तृतीयाध्याय पर्यन्त वर्तमान में उपलब्ध है।

इस प्रकार अपने लेखन के द्वारा स्वामी दयानन्द ने व्याकरणाध्ययन परम्परा को दोनों प्रकार से (प्र क्रयाक्रम और अष्टाध्यायीक्रम)से समृद्ध कया है। स्वामी दयानन्द के आगमन से पूर्व जहाँ प्रायशः

प्र क्रया क्रम से ही व्याकरण का पठन-पाठन होता था वहाँ स्वामी दयानन्द के के अनुयायी सन्या सयों, आचार्यों तथा वद्वदगणों ने आर्यसमाज संस्था के बैनर तले बालकों और बा लकाओं के पृथक्-पृथक् गुरुकुल संचा लत कये हैं जिनमें व्याकरण का अध्ययन अष्टाध्यायी क्रम से अ वच्छिन्न रूप से निर्बाध चल रहा है। उनमें से कुछ गुरुकुलों के नाम इस प्रकार है-

1. गुरुकुल कांगडी वश्व वद्यालय हरिद्वार
2. आर्ष गुरुकुल झज्जर हरियाणा
3. आर्ष गुरुकुल हौशंगाबाद मध्यप्रदेश
4. अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महा वद्यालय गुरुकुल टंकारा गुजरात
5. आर्ष गुरुकुल एटा उत्तर प्रदेश
6. आर्ष गुरुकुल चत्तौङगढ राजस्थान
7. आर्ष गुरुकुल महा वद्यालय अयोध्या उत्तरप्रदेश
8. वेद वेदांग वद्यापीठ गुरुकुल आश्रम सुल्तानपुर उत्तरप्रदेश
9. गुरुकुल महा वद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार
10. पा णनि कन्या महा वद्यालय वाराणसी
11. आर्ष गुरुकुल चोटीपुर उत्तरप्रदेश
12. आर्ष गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ उत्तरप्रदेश
13. आर्ष गुरुकुल आमसेना उडीसा
14. आर्ष गुरुकुल नजीबाबाद वजनौर उत्तरप्रदेश
15. कन्या गुरुकुल पोरबंदर गुजरात
16. वेदार्ष महा वद्यालय गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली
17. आर्ष गुरुकुल पौंधा देहरादून
18. आर्ष गुरुकुल नवप्रभात उडीसा
19. आर्ष गुरुकुल नारंगपुर उडीसा
20. दर्शनयोग महा वद्यालय आर्यबन्द रोजङ
21. उपदेशक महा वद्यालय हिसार हरियाणा
22. उपदेशक महा वद्यालय हो शयारपुर पंजाब
23. आर्ष गुरुकुल करतारपुर पंजाब
24. आर्ष गुरुकुल कशनगढ घासेडा रेवाडी हरियाणा
25. गुरुकुल नारंगपुर उडीसा
26. गुरुकुल खानपुर हरियाणा
27. आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला दिल्ली
28. आर्ष कन्या गुरुकुल रोजड गुजरात
29. कन्या गुरुकुल शवगंज सरोही राजस्थान
30. आर्ष गुरुकुल कुरुक्षेत्र हरियाणा
31. गुरुकुल सूपा गुजरात
32. आर्ष गुरुकुल आबूपर्वत राजस्थान
33. गुरुकुल प्रहलादपुर एटा उत्तरप्रदेश
34. कन्या गुरुकुल रुद्रपुर तिलहर शाहजहाँनपुर उत्तरप्रदेश
35. आर्ष गुरुकुल बरनावा उत्तरप्रदेश
36. गुरुकुल गांगेरी अलीगढ उत्तरप्रदेश
37. गुरुकुल रामघाट अलीगढ उत्तरप्रदेश
38. स्वामी सर्वदानन्द साधुआश्रम अलीगढ उत्तरप्रदेश
39. गुरुकुल सराथु प्रयागराज उत्तरप्रदेश
40. गुरुकुल सरसागंज फरोजाबाद उत्तरप्रदेश
41. आर्ष शोध संस्थान अ लयाबाद आंध्रप्रदेश
42. गुरुकुल रेवली बहालगढ सोनीपत हरियाणा
43. गुरुकुल शवा लक अंबाला
44. गुरुकुल दलहेडी सहारनपुर उत्तरप्रदेश
45. आर्ष गुरुकुल शादीपुर यमुनानगर दिल्ली
46. उपदेशक महा वद्यालय हिसार हरियाणा-आदि बहुत सारे आर्ष गुरुकुल सुचारू रूप से प्रच लत हो रहे हैं। जिनमें वेद व्याकरण आदि आर्ष ग्रन्थों का पठन-पाठन चल रहा है।

इस प्रकार गुरुकुलों का चलना और उसमें व्याकरण का आर्ष परम्परा से अध्ययन-अध्यापन होना भी स्वामी जी का व्याकरण शास्त्र के प्रति योगदान ही है।

स्वामी दयानन्द द्वारा वहित कार्यों को लघु लेख में समाहित करना कठिन कार्य है, यहाँ अति संक्षेप में स्वामी जी द्वारा कृत आर्ष परम्परा के उपकार का उपलक्षण मात्र प्रस्तुत कया गया है। उनके रग रग में ऋ षयों की प वत्र परम्परा सर्वत्र व्यापृत दृ ष्टगोचर होती है, चाहे वह वेदभाष्यादि कार्य हों अथवा सामाजिक, दार्शनिक अथवा राष्ट्रीय चन्तन परम्परा हो, सर्वत्र स्वामी जी ने ऋ षयों के अनुकूल घो षत कया है। ।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

1. जोशी, भार्गव, पातञ्जल महाभाष्य, मुम्बई, निर्णय सागर प्रेस, १९४५.
2. मीमांसक, यु ध ष्ठर, पातञ्जल महाभाष्य, दिल्ली, प्यारे लाल द्राक्षादेवी न्यास, व.सं.२०२९.
3. शर्मा, भीमसेन, सत्यार्थप्रकाश, उदयपुर(राजस्थान), श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, २०१८.
4. मीमांसक, यु ध ष्ठर, संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास, सोनीपत(हरियाणा), रामलाल कपूर ट्रस्ट,२०१६.
5. पाण्डेय, शवदत्त, मह र्ष दयानन्द सरस्वती कृत आख्यातिक एवं माधवीय धातुवृ त्त का तुलनात्मक अध्ययन, आगरा, डा. भीमराव अम्बेडकर वश्व वद्यालय आगरा, २०२१.
6. द्विवेदी, श शकान्त, अष्टाध्यायी सूत्रपाठ, वाराणसी, शारदा संस्कृत संस्थान, २०२१